

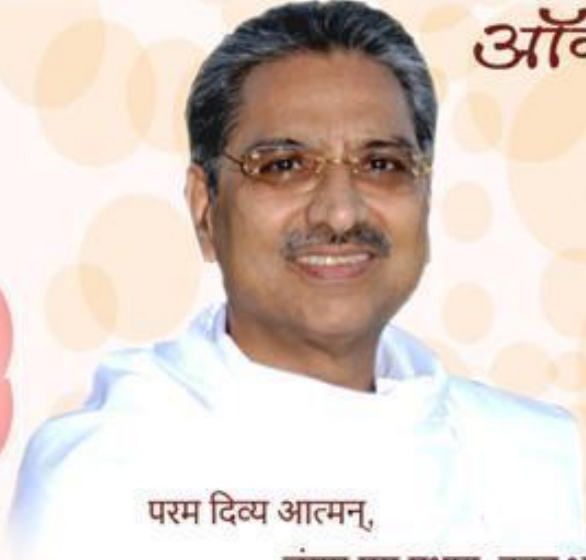


सत्य साधना केन्द्र

जुलाई 2020

अंक-09

ऑनलाईन गुरु - पूर्णिमा महोत्सव



परम दिव्य आत्मन्,

जंगम युग प्रधान, वृहत भट्टारक, खरतरगच्छाधिपति, 1008

श्रीपूज्य श्री जिनचन्द्र, सूरि, म.सा.

के दिव्य आन्नदमय सान्निध्य में

ऑनलाईन गुरु - पूर्णिमा महोत्सव

का आयोजन ऑनलाईन ऐप से किया जा रहा है।

ऑनलाईन गुरुपूर्णिमा महोत्सव में शामिल होने के लिए आप सभी सादर आमंत्रित हैं।

रविवार, 5 जुलाई, 2020

समय : प्रातः 9 बजे से...

स्थान : आपका निवास

गुरु पूर्णिमा महोत्सव में शामिल होने के लिए आपको निम्न बातों का ध्यान रखना होगा -
<https://www.gotomeet.me/SatyaSadhna> इस लिंक से ऐप को इंस्टॉल करें।
गुरु पूर्णिमा महोत्सव शुरू होने के 5 मिनट पहले आप अपना लेपटॉप, डेस्कटॉप या स्मार्टफोन ऑन कर लें।
कैमरे और स्पीकर को चालू रखें। लेपटॉप, डेस्कटॉप या स्मार्टफोन के माइक्रोफोन को बन्द रखें।
इन्कमिंग कॉल Do Not Disturb के मोड पर रखें।

✽आयोजक✽

बड़ा उपासका खरतरगच्छ श्रीसंघ
बीकानेर



लक्ष्य की सार्थकता

सत्य साधना से हटे, राग-द्वेष की खान।

हर पल समता सजगता, राह करे आसान।।



एक बार किसी राजा की उंगली में फोड़ा हो गया। शरीर में जहर न फैल जाए इसलिए राजा की उंगली काटनी पड़ी। राजा बहुत दुःखी हुआ। राजा के मंत्री ने राजा को समझाते हुए कहा 'महाराज जो भी होता है वह न तो अच्छा होता है और न ही बुरा।' राजा इस बात पर मंत्री से बहुत नाराज हुआ और उसे कारावास में डलवा दिया। कुछ दिनों बाद राजा शिकार के लिए जंगल में गया और आँधी-तूफान की वजह से अपने सैनिकों से अलग हो गया और आदिवासीयों के चंगुल में फंस गया। आदिवासी उसकी बलि चढ़ाने ही वाले थे कि एक आदिवासी की नजर राजा की कटी उंगली पर पड़ी। अंग-भंग होने की वजह से राजा को बलि के योग्य नहीं मानते हुए छोड़ दिया गया। अपने महल पहुँचते ही राजा ने कारावास से मंत्री को बुलाया और कहा कि आपने जो कहा था कि मेरी उंगली कटना न अच्छा था, न बुरा यह तो मेरी समझ में आ गया है लेकिन मेरी समझ में यह नहीं आया कि आपके कारावास जाने में क्या अच्छा हुआ और क्या अच्छा नहीं हुआ। मंत्री बोला- यदि आप मुझे कारावास में नहीं डालते तो मैं भी अवश्य आपके साथ शिकार पर जाता और आदिवासीयों की बलि चढ़ जाता। जो भी होता है वह न तो अच्छे के लिए होता है और न ही बुरे के लिए होता है।

ऐसे ही सेन्सेशन को सेन्सेशन के रूप में जाने। सेन्सेशन पर अच्छे बुरे का द्वन्द नहीं करें। सेन्सेशन न तो अच्छे के लिए होते हैं और न ही बुरे के लिए होते हैं। सेन्सेशन तो सिर्फ जानने के लिए होते हैं। संसेशन दुःखद होते हैं तो उनको समता से जानने के कारण दुःखों से छुटकारा मिलता है। संसेशन सुखद होते हैं तो उनको समता पूर्वक जानने से रागात्मक बंधनों से छुटकारा मिलता है। संसेशन असुखद-अदुःखद होते हैं अथवा संसेशन नहीं हो रहे हैं तो समता में रहने के कारण अज्ञान से छुटकारा होता है। हमारे बंधनों से हमें छुटकारा दिलाने में संसेशन तो मात्र टूल की तरह सहयोगी बनते हैं। संसेशन पर कोई प्रकार का लेबल नहीं लगाते मात्र उन्हें उनके अनित्य स्वरूप में जानते हैं और समता में रहते हैं।

ताश के पत्तों से एक खेल खेला जाता है, जिसे रम्मी कहते हैं। उसमें तेरह-तेरह पत्ते दिये जाते हैं। पत्ते ऐसे लिए जायें या वैसे लिए जायें, इसमें खेलने वाले व्यक्तियों की स्वतंत्रता नहीं होती है। तेरह पत्तों से कम या ज्यादा लिये जाएं, इसमें भी खेलने वाले व्यक्तियों की कोई स्वतंत्रता नहीं होती है। जो पत्ते हाथ में आ गए हैं, मात्र उसमें खेलने का परिश्रम करने की स्वतंत्रता होती है। संसेशन पर हमारा कोई वश नहीं है और न ही संसेशन के बदलाव पर कोई वश है।

संसेशन कैसे हो, संसेशन में बदलाव कैसा हो- यह हमारे चाहने के अनुसार नहीं होता है। संसेशन तो अपने आप हो रहे हैं, इनमें बदलाव भी अपने आप हो रहा है। लेकिन किसी संसेशन में या संसेशन के बदलाव में सुखी-दुःखी होना-नहीं होना हमारे वश में है।

एक व्यापारी ऐसे टापू में चला गया, ऐसे आईलैण्ड में चला गया जहां पर गाय के बारे में कोई भी नहीं जानता था। गाय कभी भी किसी ने वहां पर देखी नहीं थी और वह व्यापारी गाय को लेकर वहां चला गया। उसने गाय को एक-एक चीज ले जाकर राजा को देना शुरू किया। कभी दूध ले जाता, कभी दही ले जाता, कभी मक्खन ले जाता, कभी घी ले जाता। राजा तो बहुत खुश हुआ। कुछ दिन बाद व्यापारी वापस जाने लगा, तो राजा ने उस व्यापारी से कहा कि जिससे आप इतनी अच्छी-अच्छी चीजें ला-लाकर देते थे। उसे तो यहीं पर छोड़ दीजिए। जिससे हमें वे चीजें मिलती रहेंगी। व्यापारी ने गाय को छोड़ दिया। राजा ने अपने व्यक्ति को गाय के आसपास रख दिया और कहा कि जो भी चीजें इससे मिलें, उन्हें ला-लाकर मुझे देते रहा करो। व्यापारी चला गया। गाय ने गोबर किया, पेशाब किया और उसे लेकर राजा का व्यक्ति राजा के पास चला आया और राजा को दे दिया। राजा ने कहा-अरे, यह क्या लेकर आ गए? वह व्यापारी तो इतनी बढ़िया-बढ़िया चीजें लाया करता था। तुम ये क्या ले आए? राजा के आदमी ने कहा 'मैंने तो कोई गलती नहीं की है, व्यापारी के द्वारा दी गई गाय ने जो-जो चीजें दी हैं, वे ही चीजें लेकर आपके पास आया हूँ।' राजा बोला 'ओ..हो.. उस व्यापारी ने जरूर धोखा दे दिया है।' व्यापारी को पकड़कर लाया गया। तब व्यापारी ने समझाया कि ऐसे इस गाय से दूध लिया जाता है। दूध लेकर दही बनाया जाता है। ऐसे मक्खन बनाया जाता है। ऐसे घी बनाया जाता है।

व्यक्ति के द्वारा कला जानने पर गाय से दूध, दही, मक्खन प्राप्त होता है लेकिन राजा का व्यक्ति अज्ञानता के कारण गाय से मात्र गोबर और पेशाब ही प्राप्त कर पाता है। ठीक ऐसे ही व्यक्ति अज्ञानता के कारण शरीर और मन का उपयोग मात्र क्षणिक सुख के लिये करता है। सत्य साधना हम सभी को वह कला सीखा देती है कि शरीर और मन के उपयोग से आत्मा को पाया जा सकता है।

हर समय होश में रहना है - अपने ही साँस - सेन्सेशन को जानने में, साँस - सेन्सेशन को महसूस करने में। कोई कहे हम तो आराम से बैठे हैं, हमें तो अच्छा लग रहा है। ऐसा करना सत्य साधना नहीं है।

सत्य साधना तो अपने ही साँस सेन्सेशन को जानना है। शरीर की यात्रा क्रम से करते

समय सुखद सेन्सेशन और दुःखद सेन्सेशन दोनों ही में शान्त अविचलित रहना है। चाहे कितनी ही प्रतिकूल परिस्थितियां क्यों न हो, कितनी ही प्रतिकूल परिस्थितियों की आंधियां क्यों न चल रही हों। विचारों की, बेचैनी की, शंकाओं की, आलस्य की कितनी आंधियां क्यों नहीं चल रही हों। जानबूझ कर न तो बीते दिनों को मुड़ कर देखना है और न ही आपको भविष्य के ताने बाने जानबूझ कर बुनने हैं। अपने आप ताने-बाने बुनने की हर अवस्था में हमें अपनी साधना को महत्व देते रहना है।

एक बार चंदू भाई को पर्वत पर चढ़ने की मन में आई। तो उसने अपने दिमागी घोड़े दौड़ाने शुरू कर दिये। वो पर्वत की छवि को याद कर कल्पना करने लगा कि किन किन मुसीबतों का सामना उसे करना होगा। उसे किन- किन वस्तुओं की आवश्यकता होगी? जैसे- रस्सी, गरम कपड़े, छोटा स्टोव, बर्फ में चलने के लिये मोटे जूते, छड़ी आदि। सब कुछ पैक करके जब उसने सारा सामान उठाना चाहा तो उसकी सिट्टी पिट्टी गुम हो गई। इतने सामान को वो उठा ही नहीं पा रहा था और उस सबको अपने पर लादकर वो पर्वत की चोटी तक पहुँचना चाह रहा था।

लेकिन चंदू भाई ने एक ऐसे गाइड एक ऐसे कोच पोपटभाई को ढूँढ लिया जो पर्वतारोहियों को ट्रेनिंग देता था। उस कोच पोपटभाई ने चंदू भाई को समझाया कि जितने ऊंचे पहाड़ पर चढ़ना होता है उतना ही भार कम रखना होता है।

हमें तो सत्य साधना में मात्र तीन बातों का ख्याल रखना है। एक ओर शरीर-यात्रा है अथवा मूँछों का स्थान हैं, दूसरी ओर साँस-सेन्सेशन को अनुभव कर रहे हैं। तीसरी ओर द्रष्टा भाव है। आकाश किसी को न समेटता है और न ही किसी को दूर धकेलता है। दर्पण निर्लेप होता है। निरसंग होता है। दर्पण के सामने तो कोई भी आ जाये, वह न किसी को धक्का देता है और न ही किसी को चिपका कर रखता है। इसी तरह हम भी संसेशन को अनुभव कर रहे हैं।

संसेशन का नामकरण जान बूझकर के नहीं करना है। यह सेन्सेशन है तो इसका नाम क्या है? कौन सा सेन्सेशन है, ये खुजली का है? दर्द का है? भारीपने का है? यदि आदत की वजह से संसेशन का नामकरण हो भी जाता है तो उसे बिलकुल भी महत्व नहीं देना है। समता-सजगता के साथ शरीर की यात्रा करते रहना है।

किसी साधक को देखते हैं जो अनेक-अनेक शिविर भी कर लेते हैं और कहते हैं - जो लाभ होना चाहिए वह लाभ नहीं हुआ। साधना को खरा-खोटा कहते हैं, साधना को बदनाम करते हैं। सही मायनों में तो वह व्यक्ति ही गलत है, जो साधना को गलत कहता है।

जैसे कोई व्यक्ति बिना निशाना साधे तीर चलाता रहे और उम्मीद भी करे कि ऐसे निशानो से मैं निशानेबाज बन जाऊंगा। ऐसे कोई व्यक्ति निशानेबाज नहीं बन जाता। कुछ साधक-साधिकाएँ बिना साध्य के ही साधना को करते रहते हैं और जीवन में बदलाहट लाभ देखने की उम्मीद भी करते हैं।

एक तरबूज की लता के फूल को किसी गिलास में रख दिया जाए तो वह कभी भी गिलास से बड़ा नहीं हो पायेगा। इसी तरह बड़े लक्ष्य को पाने के लिये बड़ी इच्छाशक्ति की जरूरत होती है। साधना का लक्ष्य विराट होता है, हाइअर देन द स्काई। परमात्मा होना साधना का लक्ष्य होता है।

एक युवक ने संत से परमात्मा होने का रास्ता पूछा। संत ने युवक को अगली सुबह नदी किनारे मिलने के लिये कहा। जब वे वहाँ मिले तो संत ने युवक को अपने साथ नदी की ओर चलने के लिये कहा। चलते-चलते दोनों की कमर, कमर से धीरे-धीरे गर्दन तक पानी आ पहुँचा। ऐसे में अचानक संत ने युवक की गर्दन पकड़ी और उसे पानी में डूबो दिया। युवक ने पानी से ऊपर आने की लाख कोशिश की पर संत की मजबूत पकड़ के आगे उसकी एक न चली। जब पानी में डूबा युवक नीला पड़ने लगा तो संत ने झटके से युवक के सिर को पानी से बाहर निकाल दिया। पानी से सिर के बाहर आते ही युवक जोर-जोर से नाक और मुँह से साँस अपने फेफड़ों में भरने लगा। संत ने पूछा, 'जब तुम पानी के अंदर थे तब तुम्हें सबसे ज्यादा क्या चाहिये था।' युवक हांफते हुए बोला 'हवा'। संत ने पर्दाफाश करते हुए कहा, 'यही है परमात्मा होने का राज। जब तुम पानी के अंदर थे, तब जिस तड़प से तुम्हें हवा की चाह थी उसी गहराई से, उसी लगन से जिस दिन तुम परमात्मा को चाहोगे, परमात्म स्वरूप को प्राप्त कर लोगे।

परमात्म स्वरूप को पाने की आग हमारे सीने में जल रही हो। अगर हमारी इच्छा शक्ति भरपूर हो तो हम अपने लक्ष्य को हकीकत बना लेते हैं।

पूज्य यति श्री जतनलाल जी की सेवा में जगत नाम का व्यक्ति रहता था वह उनकी बहुत सेवा किया करता था। जगत की सेवा के संबंध में मैंने पूज्य यतिजी से कहा आप तो जगत के नाथ/जगन्नाथ ही हैं। तब तत्काल उन्होंने मुझे समझा दिया कि जगन्नाथ तो स्वयं को ही बनाता होता है, स्वयं में ही बनाता होता है, स्वयं के द्वारा ही बनाता होता है। यह सत्य साधना का लक्ष्य है। इसी से सत्य साधना के साधक की सार्थकता है। लक्ष्य की सार्थकता है।



॥ ॐ नमः ॥

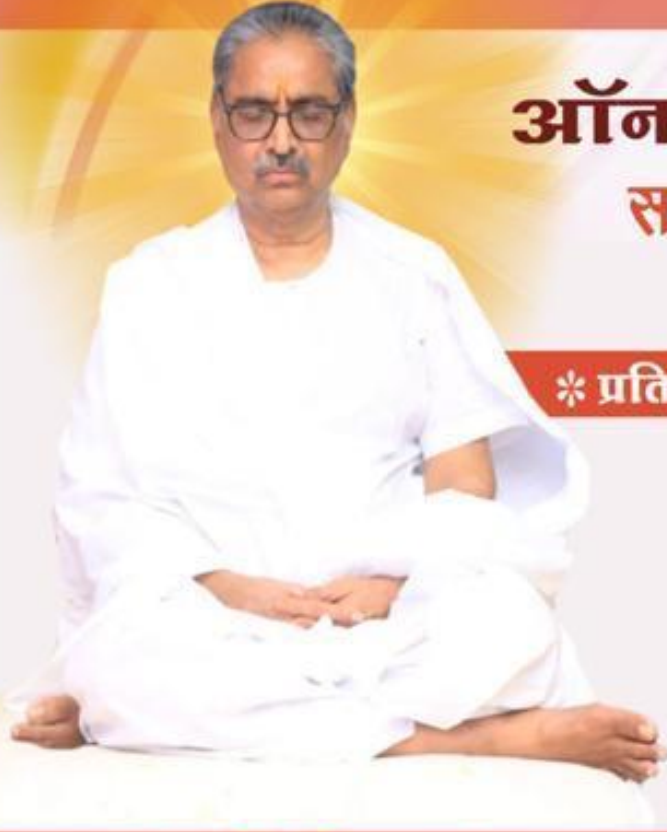
सत्य साधना केन्द्र

जुलाई 2020



खरतरगरछाधिपति
श्रीपूज्य श्री जिनचन्द्र सुरि म.सा.

गुरुपणिमा
हार्दिक शुभ
को कामनाएँ



ऑनलाईन सत्य साधना बाल शिविर



* प्रति रविवार * समय : प्रातः 9.00 से 10.00 बजे तक

ऑनलाईन सत्य साधना एक दिवसीय शिविर

* प्रति रविवार * समय : दोप. 12.05 से सायं 5.00 बजे तक

ऑनलाईन सत्य साधना सत्र

परम पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति श्रीपूज्य

श्री जिनचंद्रसूरीजी महाराज साहब

के सान्निध्य में सत्य साधना ध्यान का आयोजन

ऑनलाईन ऐप से किया जा रहा है।

इस ऑनलाईन सत्य साधना ध्यान में शामिल

होने के लिए आप सभी सादर आमंत्रित हैं।



सत्य साधना सत्र में शामिल होने के लिए आपको निम्न बातों का ध्यान रखना होगा -

<https://www.gotomeet.me/SatyaSadhna> इस लिंक से ऐप को इंस्टॉल करें।

सत्य साधना ध्यान शुरू होने के 5 मिनट पहले आप अपना लेपटॉप, डेस्कटॉप या स्मार्टफोन ऑन कर लें।

कैमरे और स्पीकर को चालू रखें। लेपटॉप, डेस्कटॉप या स्मार्टफोन के माइक्रोफोन को बन्द रखें।

इन्कर्मिंग कॉल Do Not Disturb के मोड पर रखें।

आराम से बैठें। आँखें बंद रहे और कमर सीधी रखें। निर्देशों का पालन करें। निर्देशों के अन्तराल में भी साधना करते रहें।

1. अकेले बैठे या परिवार के साथ बैठे हैं तो प्रत्येक के बीच 1 मीटर का डिस्टेंस होना अनिवार्य है।

2. अगर संभव हो सके तो आराम से जमीन पर कूशन का उपयोग कर सुखासन में बैठें अन्यथा कुर्सी का उपयोग करें।

3. जिस रूम में आप साधना कर रहे हैं वहाँ मौन रहे।

4. आपकी कमर गर्दन सीधी रखें और आँखें बंद रहें।

5. जो इंस्ट्रक्शन सुन रहे हैं, उनका पालन करें।

सत्य साधना

प्रतिदिन समय सारणी

प्रातः 5.30 से 6.30

प्रातः 8.00 से 9.00

दोप. 2.30 से 3.30

सायं 6.00 से 7.00

स्थान- आपका निवास